om 3 delhi final_Page 1 and 2 25/04/2015 18:28 Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-3 मई-1, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

वृहद महिला संस्था की प्रथम महिला का शताब्दी समारोह

प्रज्ञा से प्रखर दादी ने पूरा किया जीवन का सौवां सफ़र

चलते... चलते ...पूरा किया सफ़र का शतक
चलते चलते यूं ही कोई मिल गया था...

ये गीत आपने सुना ही होगा, लेकिन उसे चरितार्थ किया मौलाई मस्ती में रहने वाली राजयोगिनी दादी जानकी ने, एक ऐसी मस्त फ़कीर, जिसने इश्क-ए-हक़ीकी द्वारा उस खुदा की ख़िदमत में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अपने जीवन के हर कदम में उसे अपना साथी बना लिया। दूसरों के जीवन के लिए समर्पित दादी को एक ऐसे ही सहारे की ज़रूरत थी जो उसका साथ हर पल, हर क्षण देता रहे। राह में छोड़ के जो कभी गुमराह न हो जाए, ऐसे परमात्मा को दादी ने अपने ज्ञान और योग की शक्ति से अपना बनाया और ये गीत गुनगुनाया .... यूं ही कोई मिल गया....

कहा जाता है ज़िन्दगी का सफ़र अगर यूं ही कट जाये तो लोग उसे अप्रतिम नहीं मानते, कहते कुछ तो विशेष करते ज़िन्दगी में जिसे सभी अपनी यादों में समा लेते। बस कुछ ऐसा ही इतिहास हम आपके सामने रखने जा रहे हैं जो अपने आप में अद्वितीय है। एक ऐसा विवरण, एक ऐसा वृत्तांत जो मर्मस्पर्शी है, दिल को आना चाहते हैं।

मानव का सम्पूर्ण चरित्र उसके कर्मों और उसके संस्कारों से गढ़ा जाता है। कर्मों का बीज संस्कार है और संस्कारों का बीज संकल्प है। बस उन्हीं संकल्पों को जिसने शिरोधार्य किया उसी महान हस्ती का नाम राजयोगिनी दादी जानकी है। आपने अपने संकल्पों के माध्यम से अपने जीवन को

99वें जन्मोत्सव पर केक काटते हुए दादी जानकी जी। साथ हैं दादी हृदयमोहिनी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. रमेश शाह, ब्र.कु. मुन्नी तथा अन्य।

अह्लादित करने वाला है और कुछ ऐसा सिखा जाने वाला है जो जीवन को सुखदायी बना जायेगा। ऐसी विदुषी राजयोगिनी दादी जानकी जी का सम्पूर्ण इतिहास आप सबके सामने कुछ शब्दों के माध्यम से हम लेकर

'स्थिर-चित्त योगी'
पेज 6 पर...

गर्मियों में मन हो बुझा बुझा, तो खूब खाएं खरबूजा
- पेज 7 पर...

मन रूपी कागज़ पर लिखें भाग्य का लेख
- पेज 5 पर...

अग्रिम अंक '21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' पर विशेषांक

सबके लिए आदर्श बनाया। आपने वो कर दिखाया जो एक साधारण मानव को सोचना भी दूभर लगे, एक आईना हैं आप इस संसार के लिए, वो इसलिए क्योंकि आपने गृहस्थ जीवन से निकलकर वो किया जो समाज को गवारा नहीं था। आज हर दिल की चहेती बनी दादी जानकी जी ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के सफलतम सौ वर्ष पूरे कर लिए हैं।भक्ति भाव से भरी, दादी जानकी जी इस ज्ञान मे आने से पहले वो सब कुछ करती थी जो एक नौधा भक्ति वाला करता है। एक चाह थी, एक खोज थी, एक तलाश थी उसे पाने की जिसे गुफाओं, कन्दराओं में हज़ारों वर्ष तपस्या करने के बाद भी कोई मनीषी वहां तक पहुंच नहीं पाया। दादी जानकी ने अपने जीवन को उस पथ पर पूर्णतया समर्पित कर दिया और उसे ढूंढ़ के ही दम लिया। आज वो दिलाराम परमात्मा शिव निराकार दादी के साथ खेलते हैं, उन्हें पुचकारते हैं, प्यार करते हैं, बहलाते हैं। आज अपने मोहपाश में दादी ने परमात्मा को बांध रखा है। आप सोच सकते हैं कि कितनी शक्तिशाली होंगी हमारी दादी।

आज़ादी के तुरन्त बाद जाति प्रथा सहित अनेक बन्धनों को तोड़कर दादी जानकी जी ने अपनी यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ा। सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध न कर स्वयं को ही आत्मसंयमित कर दादी ने अपने कदम आगे बढ़ाये। बात करने से पता चलता है कि दादी जी के मन में बचपन से ही दूसरों के जीवन को सुखी बनाने की प्रेरणा आती रहती थी। आध्यात्मिक यात्रा के प्रारम्भिक चरण में आप शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त रहीं, फिर भी आपने इस पथ पर अपनी भूमिका को परमात्मा की प्रेरणा के आधार से बखूबी निभाया। यज्ञ

दादी जी के जीवन के मुख्य पड़ाव

1993 - दादी जी वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फेथ की उपसभापति चुनी गईं।

1996 - यूनीसेफ की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर यंग वुमेन ऑफ विज़डम नामक कार्यक्रम का शुरुंभ किया गया।

2000 - दादी जी द्वारा लिखित विंग्स ऑफ सोल नामक पुस्तक का विमोचन हुआ।

2002 - बर्मिंघम में आयोजित रिस्पेक्ट इट्स ऑल एबाउट टाइम नामक कार्यक्रम में दादी जी प्रिन्स ऑफ वेल्स सहित अनेक आध्यात्मिक नेताओं के साथ शामिल हुईं।

2005 - जून में दादी जी को काशी ह्यूमनटेरियन अवॉर्ड प्रदान किया गया।

2006 - जस्ट ए मिनट के प्रारंभ के अवसर पर रोबिन गिब्स द्वारा रचित कविता मदर ऑफ लव दादी जानकी को समर्पित किया गया।

2007 - 27 अगस्त 2007 को दादी जी को संस्था की मुख्य प्रशासिका का कार्यभार सौंपा गया।

दादी जी एक प्रखर प्रज्ञा

क्या भाषा बाधा हो सकती है हमारे प्रगति में ? शायद नहीं, वो इसलिए क्योंकि दुनिया में लोग भाव को महत्व ज़्यादा देते है, भाषा को नहीं। प्रखर प्रज्ञा के रूप में जानी जाने वाली हमारी दादी इसका एक मिसाल हैं जिन्होंने विदेशी भाषा को न जानने के बावजूद भी अपनी योग शक्ति व परमात्म बल से विदेशी जनों को भी अपना बनाया और ऐसा बनाया कि आज विदेश के सभी प्रबुद्ध जन दादी जी के एक-एक महावाक्य को अपने लिए प्रगति की सीढ़ी मानते हैं। लौकिक शिक्षा दादी जी की बहुत कम रही इतिहास में यह बात आती है कि दादी जी को सेवा भी ऐसी मिली थी जिसे सभी लोग नहीं कर सकते थे। वो हमेशा यज्ञ में आये हुए यज्ञ वत्सों की व्याधियों को ठीक करने तथा उन्हें सेवा देने का काम करती थीं। बीमारी आदि से ग्रस्त भाई-बहनों की नर्स के रूप में आपने खूब सेवा की और वह उस समय की थी जब आप खुद शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं थीं।

है परन्तु अपनी चौदह वर्षों की तपस्या के बल से उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा को अपने अंग-अंग में उतारा।

दादी जानकी जी को ईश्वरीय विश्व

डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित

दादी जी द्वारा विश्व जनमानस के मन में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के अनुपम कार्य के लिए विशाखापट्टनम स्थित गीतम यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाज़ा गया। जिसके तहत आपने लाखों लोगों की ज़िन्दगी में सकारात्मक बदलाव लाया। आज हमारी दादी जानकी जी संस्था की प्रखर प्रज्ञा के रूप में चारों तरफ अपनी प्रज्ञा को बिखेर रहीं हैं। उनके द्वारा अनेकानेक आत्माओं के ज्ञान चक्षु खुल रहे हैं।

विद्यालय की ओर से पाश्चात्य संस्कृति को भारतीय संस्कृति के साथ मिलाने के लिए सेवा पर भेजा गया। उनके अन्दर पूर्णतया भारतीय संस्कृति का भाव - शेष पेज 3 पर